मर्सिडीस और चॉकलेट पायलट

बर्लिन एयरलिफ्ट और आसमान से बरसती कैंडी की सच्ची कहानी

लेखनः मारगॉट थेइस रेवन

चित्रः हाइसबर्ट वॉन फ्रैंकनहायज़न

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

मर्सिडीस और चॉकलेट पायलट

बर्लिन एयरलिफ्ट और आसमान से बरसती कैंडी की सच्ची कहानी

1948 में बर्लिन में जीवन बेहद विकट था। इलाके को कम्युनिस्ट शासन के तहत लाने की कोशिश में जोसेफ स्टालिन ने पश्चिमी बर्लिन की सड़कों, रेलमार्गों, और नहर मार्गों की नाकेबन्दी कर दी थी। नतीजतन पश्चिमी बर्लिन खाद्य सामग्री, कपड़ों, कोयला/किरासिन और बिजली का मोहताज हो गया। बाहरी मदद के बिना वहाँ के 23 लाख लोगों के बचने की उम्मीद न थी।

इस पृष्ठभूमि में बर्लिन एयरलिफ्ट (विमान सेवा) आरंभ हुई जो एक मानवतावादी बचाव अभियान था। इसमें ब्रिटिश व अमरीकी हवाई जहाज़ और उनके चालक आवश्यक रसद पहुँचाते थे। इस अभियान से जुड़े एक अमरीकी पायलट ने न केवल बच्चों के लिए पोषण उपलब्ध करवाया, बल्की उनके मन में एक बेहतर दुनिया की उम्मीद भी जगाई। उनके इस विचारशील और उदार कृत्य ने लैफ्टिनैन्ट हालवरसन और बर्लिन के बच्चों के बीच एक आजीवन रिश्ता गढ़ दिया।

यह कहानी एक सात वर्षीय बच्ची मर्सिडीस, जो इस राहत अभियान के दौरान पश्चिमी बर्लिन में रहती थी और एक अमरीकी पायलट (विमान चालक) लैफ्टिनेन्ट हालवरसन की सच्ची कहानी है, जो 'चॉकलेट पायलट' के नाम से जाने जाते थे।

चित्रकार हाइसबर्ट वॉन फ्रैंकनहायज़न के चित्र मारगॉट थेइस रेवन की उस दमदार कहानी में प्राण फूंकते हैं, जो उम्मीद, दोस्ती और मधुर स्मृतियों की कथा है। पाठकों की कई पीढ़ियों को यह कहानी प्रेरणा देती रहेगी।

मर्सिडीस और चॉकलेट पायलट

बर्लिन एयरलिफ्ट और आसमान से
बरसती कैंडी की सच्ची कहानी

लेखनः मारगॉट थेइस रेवन

चित्रः हाइसबर्ट वॉन फ्रैंकनहायज़न

भाषान्तरः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

बर्लिन के और दुनिया तथा स्वर्ग के बच्चों के लिए, खास तौर से निक रैसलर के लिए जो च्यूइंग गम के एक पत्ते की ताकत को जानता था।

- एम.टी.आर.

उनके लिए जो हमारी आज़ादी की सुरक्षा करते हैं।

- जी.एस.एफ.

लेखिका की कलम से

यह पुस्तक कर्नल गेल एस. हालवरसेन (अमरीकी वायु सेना, सेवा निवृत्त) और पश्चिमी बर्लिन, जर्मनी की मर्सिडीस वाइल्ड के उदार सहयोग और आशीषों से अस्तित्व में आ सकी। इस कहानी को मेरे साथ साझा करने के लिए आप दोनों का तहेदिल से शुक्रिया।

कहानी से जुड़ी महत्वपूर्ण सूचनाएं एकत्रित करने में मदद करने के लिए पीटर वाइल्ड (बर्लिन, जर्मनी); कर्नल कैनेथ हर्मन (अमरीकी वायु सेना, सेवा निवृत्त) बर्लिन एयरलिफ्ट वेटरनस् एसोसिएशन के पूर्व अध्यक्ष; गुडरन फ्रूशिंग, सम्पादक आर्मड फोर्सेस जर्नल इन्टरनैशनल; क्रिस्टा बोर्गमन, जर्मन भाषा विशेषज्ञ; कैन सैनसम; कैरन, क्लाउस, मार्सेल व फ्राओ लीलो व हमर्दद पड़ौसियों का आभार।

इस परियोजना में शुरु से विश्वास जताने के लिए मेरी एजेन्ट आन्द्रिया ब्राउन को शुक्रिया। मेरी सम्पादक हैदर ह्यूस व सह-सम्पादक बार्ब मैकइनली का, तथा प्रचारक मेरी एन रिचले का इस कहानी में भरोसा रखने के लिए आभार।

अंत में मेरे बहनोई बॉब रीड को उनके जादूई स्पर्श के लिए शुक्रिया। बेटे स्कॉट को अडोबे के सत्रों के लिए शुक्रिया। मेरे पति ग्रैग को वॉशिंगटन में मदद करने के लिए धन्यवाद। बेटी एशली का विशेष आभार जिसने इस किताब की रचना को मेरे साथ साझा किया। यूटा तक साथ सफ़र करने के अलावा उसने अनेक सप्ताहान्तों के फोटो कॉपी सत्रों को मजेदार बनाने में मदद की।

- मारगॉट थेइस रेवन

मेरी मित्र मर्सिडीस का अशेष आभार। उन विलक्षण प्रोफेशनलों का तहेदिल से शुक्रिया जिन्होंने उसके संघर्ष को शब्दों व चित्रों में उतारा – मारगॉट थेइस रेवन, हाइसबर्ट वॉन फ्रैंकनहायजन तथा स्लीपिंग बेयर प्रेस की टीम।

कर्नल गेल हालवरसन

चित्रकार की कलम से

हमेशा की तरह मैं उन मॉडलों का शुक्रिया अदा करना चाहूँगा जिन्होंने इन चित्रों को बनाने में मदद की। उस्तीना शाइव्स, अन्दर व बाहर से एक खूबसूरत बालिका है। तुम एक बेहतरीन मर्सिडीस सिद्ध हुई। बेन विन्कल, अभिनेता, कॉर्नेल एलिमेंट्री स्कूल के रॉन मैकर्डी की चौथी कक्षा, गनिसनविले एलिमेंट्री के जॉन शिवर्स की चौथी कक्षा को आभार। कर्नल गेल हालवरसन और उनकी पत्नी लॉरेन का विशेष आभार। आपने जो कहानियाँ साझा कीं उनसे मुझे इस कथा के चित्र आँकने में मदद मिली, जो दरअसल उम्मीद, प्रेम और मुआफ़ी की कहानी है।

- हाइसबर्ट वॉन फ्रैंकनहायज़न

“कोई चर्चा नहीं होगी। हम बर्लिन में डटे रहेंगे, खड़ी पाई!”

- राष्ट्रपति हैरी एस. ट्रूमन

बर्लिन एयरलिफ्ट (विमान सेवा)

1948-1949 का बर्लिन एयरलिफ्ट आज भी दुनिया के महानतम मानवीय अभियानों में एक है। एक विशाल हवाई पुल की तरह हवाई जहाज़ 15 कष्टदाई महीनों तक, हर दिन, चौबीसों घंटे, हर तीन-तीन मिनट की अवधि के बाद उड़ान भरते रहे, ताकि 23 लाख पश्चिमी बर्लिन के बाशिन्दों को भोजन व जीने की अन्य ज़रूरतें उपलब्ध करवा सकें।

यह अभियान द्वितीय विश्व युद्ध के तीन साल बाद तब शुरू किया गया जब युद्ध में हारने के बाद जर्मनी और उसकी राजधानी बर्लिन को, एक पाई की तरह चार हिस्सों में बांट उन मित्र राष्ट्रों को सौंप दिया गया, जिन्होंने एडॉल्फ हिटलर की सेना को परास्त किया था। बर्लिन के पूर्वी हिस्से और पूर्वी जर्मनी पर भी, सोवियत युनियन के जोसेफ स्टालिन का नियंत्रण था। जबकि ब्रिटेन, अमरीका और फ्रांस का पश्चिमी जर्मनी व पश्चिमी बर्लिन पर नियंत्रण था।

शुरुआत में चारों मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी पर दोस्ताना अंदाज़ से शासन किया। पर 24 जून 1948 के दिन जोसेफ स्टालिन ने पूर्वी व पश्चिमी जर्मनी को हथियाना चाहा, ताकि वह उसके बाद समूचे युरोप पर वामपंथी सरकार स्थापित कर उस पर काबिज़ हो सके। पश्चिमी बर्लिन रूसी सरहद में 110 मील अन्दर स्थित था। सो स्टालिन ने उसकी सड़कों, रेल मार्गों, और नहर मार्गों पर नाकेबन्दी कर दी, ताकि पश्चिमी बर्लिन में आने-जाने का कोई ज़रिया ही नहीं रहे। पश्चिमी बर्लिन के बाशिन्दे भोजन, कपड़ों, घर गरम रखने के लिए कोयला और बिजली से पूरी तरह काट दिए गए।

ऐसे में मित्र राष्ट्र क्या करते? अगर वे बन्दूकों और टैंकों से पश्चिमी बर्लिन को छुड़ाने की कोशिश करते, तो एक और विश्व युद्ध शुरु हो सकता था। केवल बीस मील चौड़े तीन वायु मार्ग थे जिनका उपयोग अमरीका, ब्रिटेन और फ्रांस कर सकते थे। इन स्थितियों में हवाई पुल का अविश्वसनीय विचार ने जन्म लिया।

26 जून 1948 से सितम्बर 1949 के बीच बिटिश और अमरीकी वायु सेनाओं ने दिन-रात 277, 000 से भी अधिक उड़ानें भरीं, ताकि पश्चिमी बर्लिन के 23 लाख बाशिन्दों को रसद पहुँचाई जा सके। कुल मिला कर उन्होंने इस दौरान जितनी दूरी तय करी उसमें धरती से चाँद तक 130 बार जाया और लौटा जा सकता है।

बर्लिन वासियों को ज़िन्दा रखने के लिए बर्लिन को हर दिन 4,500 टन खाद्य सामग्री, कोयला व किरासिन और अन्य दैनिक ज़रूरतों की आवश्यकता थी। ज़रा कल्पना करें कि हर दिन 646 टन आटा व गेहूँ; 180 टन सुखाए हुए आलू; 19 टन मिल्क पाउडर और शिशुओं के लिए 5 टन ताज़ा दूध; 109 टन माँस और चर्बी; 125 टन सिरियल; 5,000 टन कोयला और किरासन; साथ ही ज़रूरत की दूसरी चीज़ों को हर दिन पैक किया जाता था, ढो कर जहाज़ में चढ़ाया और तब गन्तव्य पर उतारा जाता था। यह सब हवाई जहाज़ों से पहुँचाया जाता था।

इस राहत अभियान में कुछ भी आसान नहीं था। समस्याएं अनेक थीं: मौसम ख़राब था; जहाज़ों के उड़ान भरने और उतरने वाले रनवे बहुत छोटे थे; आसमान में लगातार विमानों की भीड़ रहती थी; विमान चालकों को सोने-आराम करने का बहुत कम समय मिलता था। रूसी जहाज़ इन थके-हारे पायलटों को परेशान करते थे। और तो और कोयले का चूरा और आटा जहाज़ की मशीनों में गड़बड़ियाँ पैदा करते थे।

इस अभियान की सबसे बड़ी कीमत जीवन के रूप में चुकानी पड़ी। उन पंद्रह महीनों में 31 अमरीकी, 39 ब्रिटिश और 9 जर्मनों की जानें गईं। पर इस कुर्बानी को भुलाया नहीं गया। बर्लिन में आज भी उस अद्‌भुत हवाई पुल की स्मृति वहाँ के उन निवासियों के मन में बसी है, जो आज़ादी से प्यार करते हैं और बहादुर विमान चालकों और उनके देशों को स्नेह से याद करते हैं, जिन्होंने ज़रूरत के वक़्त उनका साथ नहीं छोड़ा।

यह कहानी सात वर्षीय बच्ची मर्सिडीस सिमोन की है, जो उस अभियान के दौरान पश्चिमी बर्लिन में रहती थी, और एक अमरीकी विमान चालक की भी है जो ‘चॉकलेट; पायलट के नाम से मशहूर हो चुके थे।

बर्लिन 1948
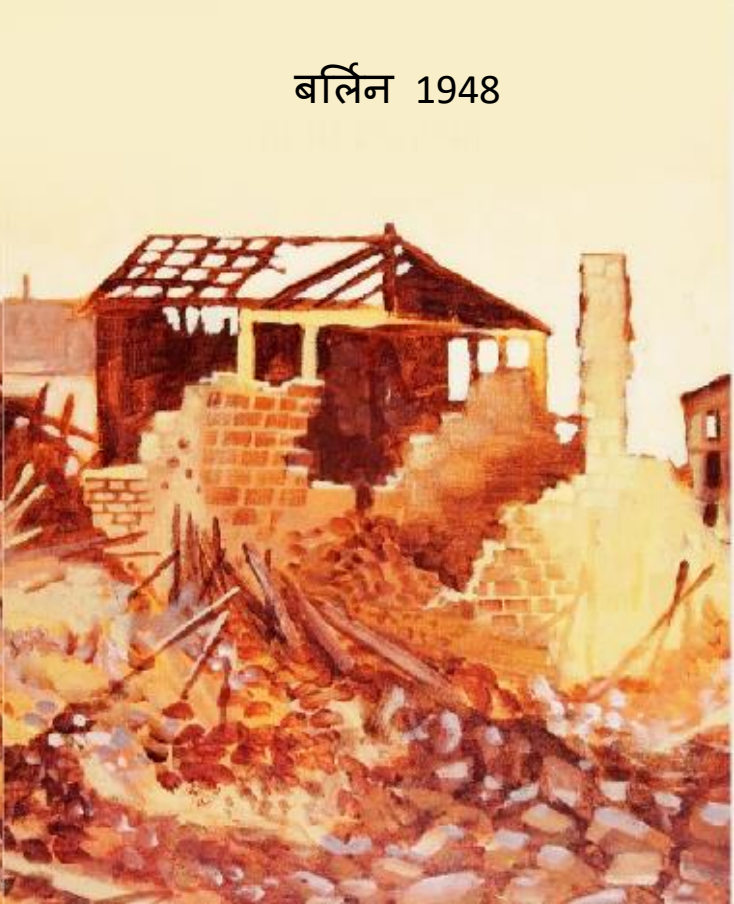
अगस्त का महीना खत्म होने को था। एक दिन मर्सिडीस ने अपनी सफ़ेद मुर्गियों के नीचे हाथ सरकाया, जिन्हें वह अपने अपार्टमेंट वाली इमारत के पीछे बने अहाते में रखती थी।

काश अंडे हों! वह यह उम्मीद कर रही थी। सिर के ऊपर आसमान में रुपहले पंखों वाले हवाई जहाज़ रक्षक देवदूतों की तरह उड़ रहे थे। पर कल की तरह आज भी दड़बा खाली था, सिवा एक छोटे से अंडे के।

मर्सिडीस ने हरेक मुर्गी को एक-एक कीड़ा खिलाया, और अपने आँसूओं को रोकने की कोशिश की। उसे अपने चारों पंखों वाली दोस्तों से प्यार था। और पश्चिमी बर्लिन में रूसी नाकेबन्दी के दौरान अंडे, सोने से भी ज़्यादा अनमोल थे। "कल मुझे तुम सबसे एक-एक अंडा चाहिए," उसने मुर्गियों को सख़्ती से डांटते हुए कहा। "नहीं तो माँ कहेगी कि तुम लोगों को पालना हमें पोसाता नहीं, और तुम लोग हमारे रात का खाना बन जाओगी!"

बम के किरचों से दागिल अपने अपार्टमेंट की सीढ़ियाँ चढ़ते समय मर्सिडीस को विश्वास था कि उसकी सफ़ेद मुर्गियाँ हवाई जहाज़ों की गर्जना से इतना डरती थीं कि वे अंडे दे ही नहीं पा रही थीं।

ये विशाल रुपहले हवाई परिन्दे दिन-रात उनके घर के ऊपर से गरज़ते हुए पास के टैम्पलहॉफ हवाई अड्डे पर रसद पहुँचाने उतरते थे। पर मर्सिडीस इन उड़ने वाली किराना की दुकानों की शिकायत कभी नहीं करती थी। लोग तो उन्हें रेसिनबॉम्बर्स कहते थे क्योंकि वे स्वादिष्ट रेसिन यानी किशमिश लाते थे। वे आटा, कपड़े और कोयला भी लाते थे। साथ ही और भी बहुत कुछ!

एक दिन ममा ने उसे अखबार में छपी एक कहानी पढ़ कर सुनाई, जिसमें हवाई जहाज़ से बरसने वाली कैंडी (मीठी गोलियाँ, चॉकलेट आदि) का ज़िक्र था। कहानी एक अमरीकी चॉकलेट पायलट के बारे में थी, जो हर दिन उन बच्चों पर कैंडी बरसाया करता था जो टैम्पलहॉफ अड्डे के बाहर उनके स्वागत में खड़े होते थे।

ममा के पढ़ कर सुनाने से मर्सिडीस को पता चला कि उस दोस्ताना पायलट ने एक दिन हवाई अड्डे पर उतरने के बाद रनवे के छोर पर बनी बाड़ के पास आकर बच्चों से बात की थी।

''बच्चों ने उनसे चॉकलेट नहीं मांगी थी,'' ममा ने पढ़ा, ''बस मीठी आज़ादी मांगी थी। पर पायलट ने लौटने के पहले अपनी जेबें टटोल कर च्यूइंग गम तलाशा, पर उन्हें सिर्फ दो गम मिले - और बच्चे तीस थे।''

''उन्होंने तब क्या किया ममा?'' मर्सिडीस ने उत्सुकता से पूछा।

''गम तो उन्होंने चार किस्मत वाले बच्चों में बांट दिया,'' ममा पढ़ती जा रही थीं। ''बाकी बच्चों ने उसकी रुपहली पन्नी के चिन्दियाँ कर आपस में बांट लीं, ताकि वे उस दुर्लभ चीज़ की खुशबू सूंघ लें।'' इसके बाद यह जानते हुए भी कि वे मुश्किल में फंस सकते हैं, अगले दिन उस पायलट ने अपने जहाज़ से बच्चों पर च्यूइंग गम और चॉकलेट बरसाई। उन्होंने बच्चों से कह दिया था कि वे उनके जहाज़ के पंखों के हिलने पर नज़र रखें।
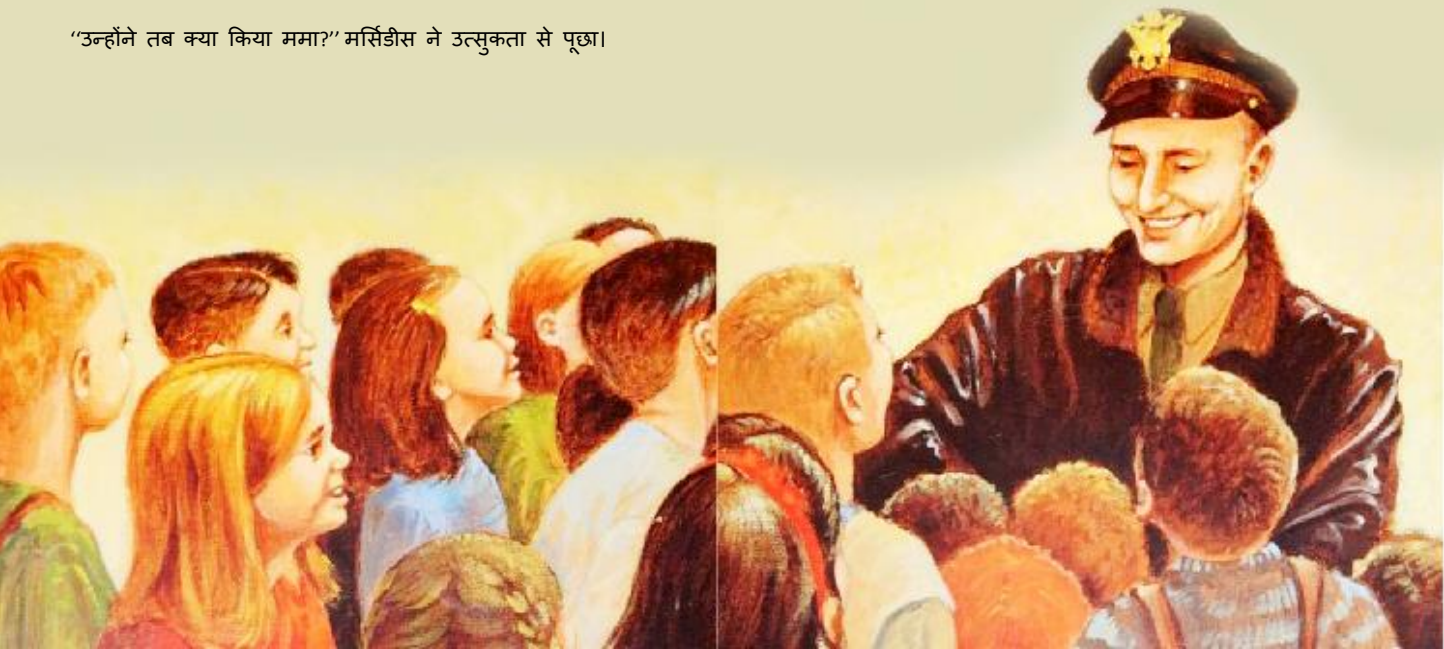
"उस रात विमान चालक ने रूमालों की मदद से चॉकलेट के लिए छोटे पैराशूट बनाए," ममा ने आगे पढ़ा। "और अगले दिन हवाई अड्डे के पास खड़े बच्चों पर गुचचुप गिराए। तीन बार ऐसा कर चुकने के बाद उनकी मुश्किल शुरू हुई!"

दरअसल अड्डे पर बच्चों के ख़त आने लगे जो चाकलेट पायलट और अंकल विगली विंग्स को संबोधित थे। तब एक दिन एक चॉकलेट एक ख़बरनवीस के सिर से टकराई। टैम्पलहॉफ के प्रभारी कर्नल ने चालक की हरकतों के बारे में अख़बार में पढ़ा! वे पकड़े गए!

''क्या कर्नल ने उन्हें डाँटा?'' मर्सिडीस ने कुछ घबरा कर पूछा। पर ममा ने हंस कर कहा, ''सिर्फ थोड़ा-सा, तब हाथ मिलाया और कहा कि वे कैंडी बरसाना जारी रखें, पर उन्हें इसकी जानकारी देते रहें।''

''पर उनके पास मीठी गोलियाँ खत्म नहीं हो जाएंगी?'' मर्सिडीस ने जानना चाहा, पर ममा फिर से हंसी।

''पूरे अमरीका से लोग उस पायलट को पैराशूट बनाने के लिए रूमाल और इतनी चॉकलेट भेजते हैं कि रेलगाड़ी के दो डब्बे भर जाएं।''

मर्सिडीस ने राहत की सांस ली। “क्या मैं भी कैंडी लेने टैम्पलहॉफ जा सकती हूँ ममा?”

“अकेले तो बिलकुल नहीं मेरी प्यारी,” फ्राओ सिमोन ने चेताया। “सड़कें ख़तरनाक हैं। हर जगह सैनिक हैं और बमबारी का मलबा भरा है। पर मैं वादा करती हूँ कि मैं जल्द ही तुम्हें चॉकलेट पायलट को दिखाने हवाई अड्डे ले जाउंगी,” उन्होंने मर्सिडीस को गले लगाते कहा।

मर्सिडीस को धुंए की महक आई जो माँ की पोशाक में तब से बसी थी, जब बमबारी हुआ करती थी। वह जानती थी कि माँ गुपचुप पापा के लिए रोया करती थीं, क्योंकि वे युद्ध से लौटे नहीं थे।

“फिक्र न करो ममा, जब अपन जाएंगे मैं आपके पास रहूँगी,“ उसने कहा। मैं आपकी परछांई पर चलूंगी ... सिवा तब जब मैं अपनी चॉकलेट लेने दौड़ लगाऊंगी“ उसने उमगते हुए कहा।

कुछ सप्ताह बाद, जैसा ममा ने वादा
किया था, मर्सिडीस हवाई अड्डे की बाड़
के पास दूसरे बच्चों के साथ खड़ी थी।
उसके ऊपर बादलों के बीच से गरजते
हवाई जहाज़ नीचे उतर रहे थे।

इतनी तेज़ी से कि उसके पैरों के नीचे धरती
कांप रही थी। तब बच्चों के बीच एक खुशी
का शोर उठा, क्योंकि उन्होंने चॉकलेट
पायलट के जहाज़ के पंखों को हिलता देख
लिया था। अचानक कई छोटे-छोटे सफ़ेद
पैराशूट बादलों से नीचे तैरते आए!

मर्सिडीस भी दूसरे बच्चों के साथ उत्साह से कैंडी लपकने दौड़ी। उसका हाथ ऊँचा उठा हुआ था, ताकि वह आकाश से उतर रही रहमत को थाम ले। पर आख़िरी पल पास खड़े एक लम्बे लड़के ने उसकी ओर बढ़ रहे पैराशूट को लोक लिया।

उस लड़के ने जब उस नरम चॉकलेट में दाँत गड़ाए, उसकी आँखों में कितनी खुशी थी! घर लौटते वक़्त मर्सिडीस बस यही सोच रही थी।

हवाई जहाज़ों की आवाज़ अपने घर के ऊपर सुन मर्सिडीस ने अपने आँसू पोंछे। काश वह उस चॉकलेट को पकड़ पाई होती, फिर इस बात का कोई फर्क न पड़ता कि मुर्गियों ने अंडे दिए या नहीं। चॉकलेट उसे और उसकी ममा को खुश कर देते! पर वह कर भला क्या सकती थी।

अचानक मर्सिडीस को अख़बार के लेख में छपी एक और बात याद आई। उसे याद आया कि बच्चे चॉकलेट पायलट को ख़त लिखा करते थे। सो उस रात, चाँद की रोशनी में वह एक ख़त लिखने बैठी। बड़ी सावधानी से, जैसा स्कूल में उसने सीखा था, उसने लिखाः

प्रिय चॉकलेट पायलट,

हम टैम्पलहॉफ हवाई अड्डे के पास रहते हैं, और हमारी मुर्गियाँ सोचती हैं कि आपके जहाज़ मुर्गी-खाऊ बाज़ हैं। सो जब आप लोग ऊपर से गुज़रते हैं वे सहम जाती हैं। वे छिपने भागती हैं और अंडे नहीं दे पातीं। हमें अंडों की ज़रूरत है। पर अगर आप हमारे अर्पामेंट के अहाते के ऊपर से उड़ें और आपको हमारी सफ़ेद मुर्गियाँ दिख जाएं, तो मेहरबानी से कुछ चॉकलेट गिरा दें तो सब ठीक हो जाएगा। अगर आप तब मुर्गियों को डरा भी दें तो कोई परवाह नहीं।

-आपकी नन्ही दोस्त मर्सिडीस

फ्राओ सिमोन ने मर्सिडीस का पत्र अगले दिन डाक में डाल दिया। उन्होंने इस ख़याल को होंठों में दबा दिया कि एक व्यस्त पायलट हरेक बच्चे के ख़्वाब को हकीकत में बदल नहीं सकता।

ख़त लिखने के बाद मर्सिडीस हर दिन अपनी मुर्गियों के साथ अपने अहाते में इन्तज़ार करती। सोचती कि ऊपर से गुज़रने वाला हरेक देवदूत-जहाज़ शायद उसके लिए कैंडी गिरा दे।
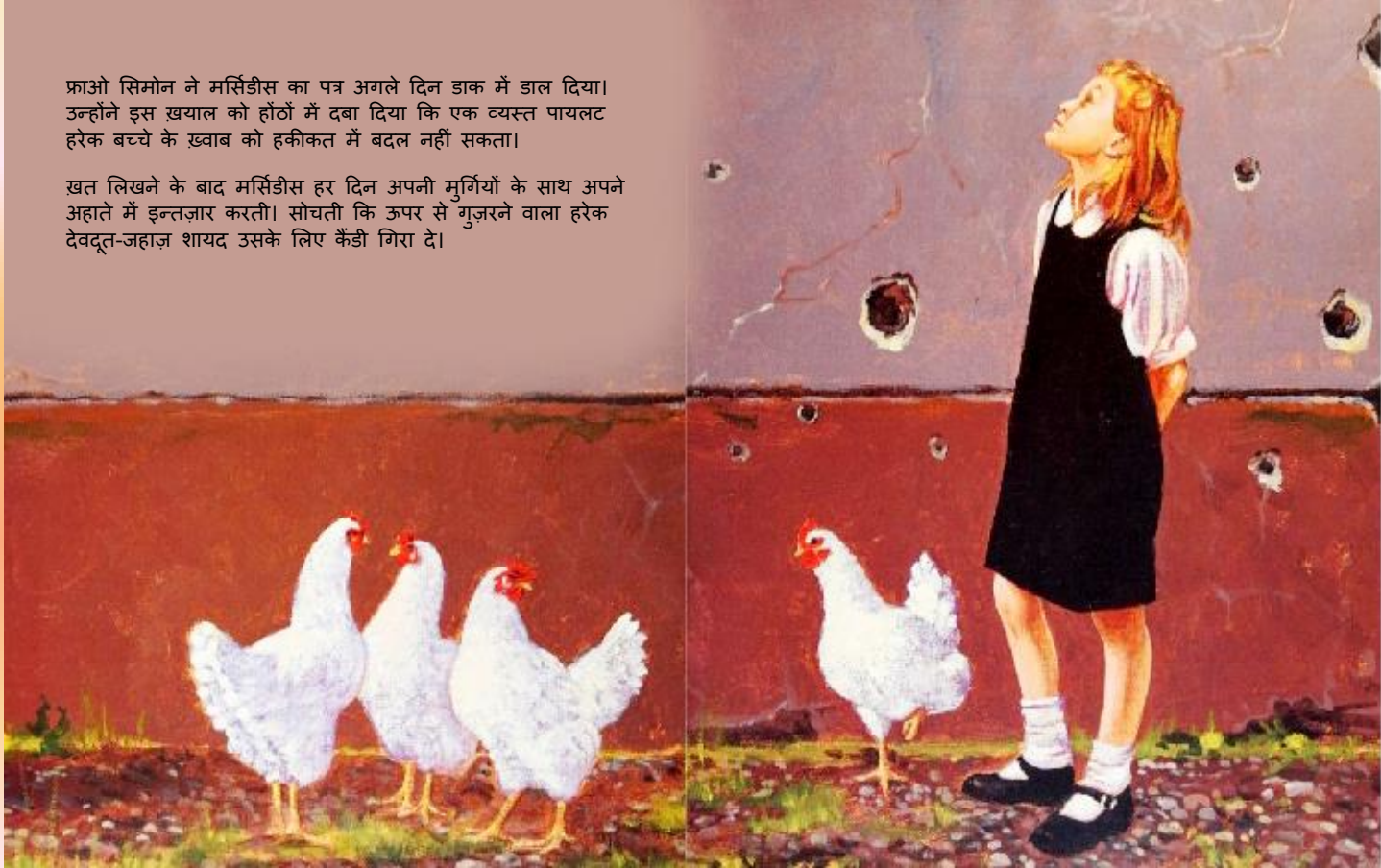
उस दिन तीन-तीन बार बर्लिन तक जाने और फ्रैंकफर्ट के राइन-मेन वायु सेना अड्डे लौटने के बाद लैफ्टिनेंट गेल हालवरसन ने मुट्ठी भर ख़त अपने बिस्तर पर रखे। अक्तूबर खत्म होने वाला था। पिछले कई महीनों से पूरे पश्चिमी बर्लिन से बच्चे उन्हें ख़त लिखा करते थे और साथ में क्रेयान से बने रंगीन चित्र भेजा करते थे। हर सप्ताह दो जर्मन सचिव उन ख़तों का अंग्रेज़ी में अनुवाद कर उन्हें देती थीं। कुछ को व्यक्तिगत जवाब मिलते। पर हरेक ख़त उनके दिल को छूता, कुछ तो उन्हें इतना हंसाते कि हंसते-हंसते उनके आँसू ही निकल जाते थे।

एक नौ साल के लड़के पीटर ज़िमरमैन ने चॉकलेट पायलट को लिखा था कि उसके पैर बहुत छोटे हैं, सो वह आसमान से गिरती कैंडी को पकड़ने तेज़ी से भाग नहीं पाता। सो उसने अपने घर का नक्शा बना ठीक से निर्देश दिएः

“बड़ी नहर के पास से उड़ें ... दूसरे पुल के पास दाहिने मुड़ें ... मैं कोने वाले बम से खंडहर हुए मकान में रहता हूँ। मैं हर दिन दोपहर दो बजे घर के पिछवाड़े इन्तज़ार करुंगा। मेहरबानी से आप कैंडी वहीं गिराएं।
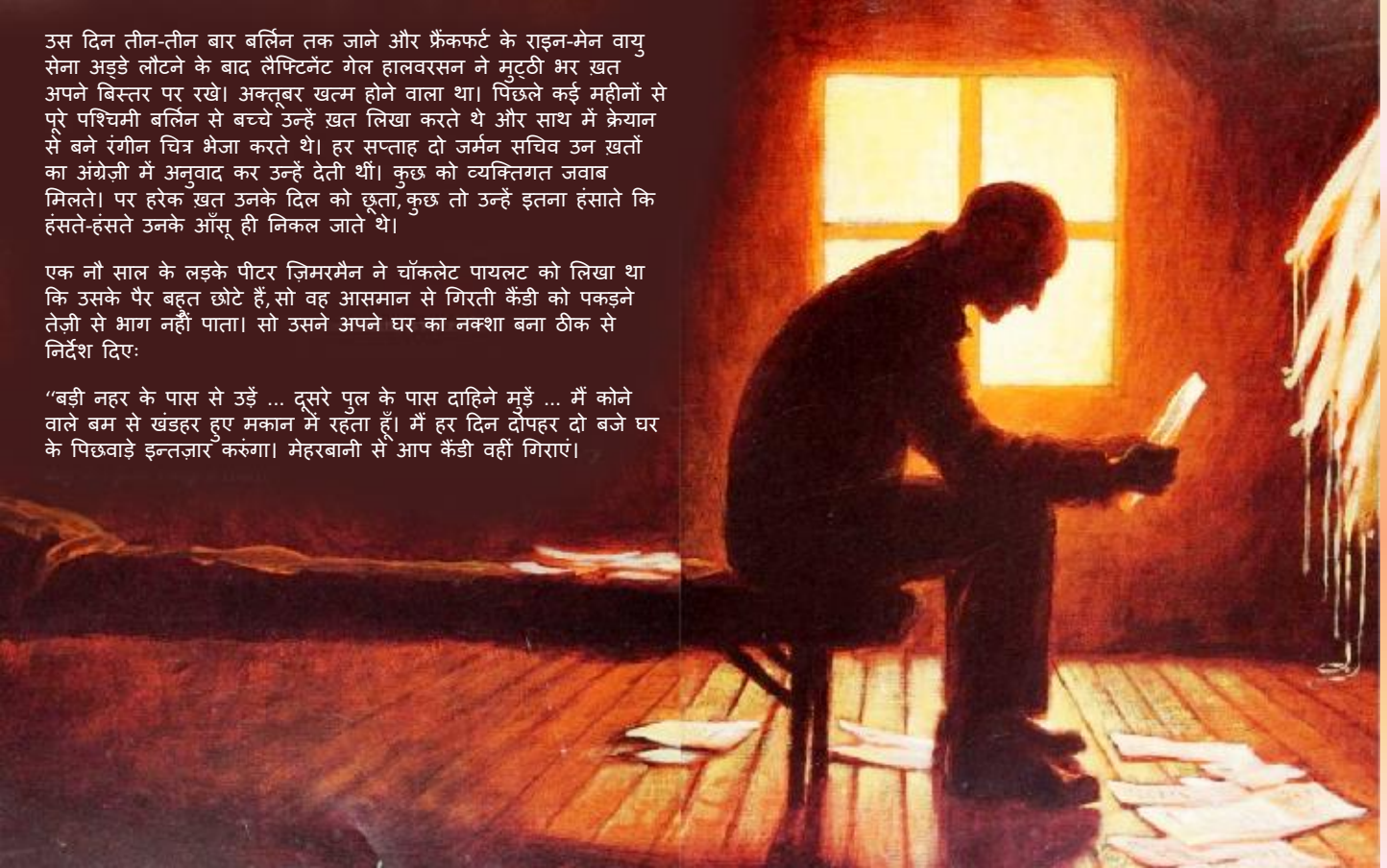
लैफ्टिनेन्ट हालवरसन ने जहाज़ में बैठे पीटर के घर को तलाशने की कोशिश भी की। जब वह नहीं मिला तो उन्होंने एक डब्बे में कुछ चॉकलेट और बबल गम डाले और पीटर के घर के पते पर बर्लिन डाक सेवा से भेज दिया। पर केवल तब, जब पीटर ने उन्हें फिर से ख़त लिख यह उलाहना न दीः "अब तक नहीं मिली है चॉकलेट। कैसे पायलट हैं आप? मैंने तो नक्शा भी भेजा था। आखिर आप जंग जीते तो कैसे?"

पर आज तो अक्तूबर के अंत का दिन था। हालवरसन ने उस दिन के ख़त खोले। एक-एक कर उन्हें पढ़ा। उनकी आँखें उस नन्ही लड़की के ख़त पर टिकी रह गईं जिसके अपार्टमेंट के अहाते में सफ़ेद मुर्गियाँ थीं। वे ख़त पढ़ पहले मुस्कराए, तब यह पढ़ अपने आँसुओं को रोकाः "... हमें अंडों की ज़रूरत है। पर अगर आप हमारे अहाते के ऊपर से उडें और आपको सफ़ेद मुर्गियाँ दिखें तो मेहरबानी से कुछ कैंडी गिराएं। तो सब ठीक हो जाएगा। ... आपकी नन्ही दोस्त मर्सिडीस।"

लैफ्टिनेन्ट हालवरसन ने अपना हाथ सिर पर फिराया। उनकी इस नन्ही दोस्त की उम्मीद उसके अंडों जितनी ही नाज़ुक थी और उतनी ही कीमती भी जितनी मर्सिडीस के लिए उसकी सफ़ेद मुर्गियाँ थीं। पर उन्हें मुर्गियों वाला घर मिलेगा कैसे? पीटर के नक्शे के बावजूद वे नहर के पास वाले उसके घर को तलाश नहीं सके थे।
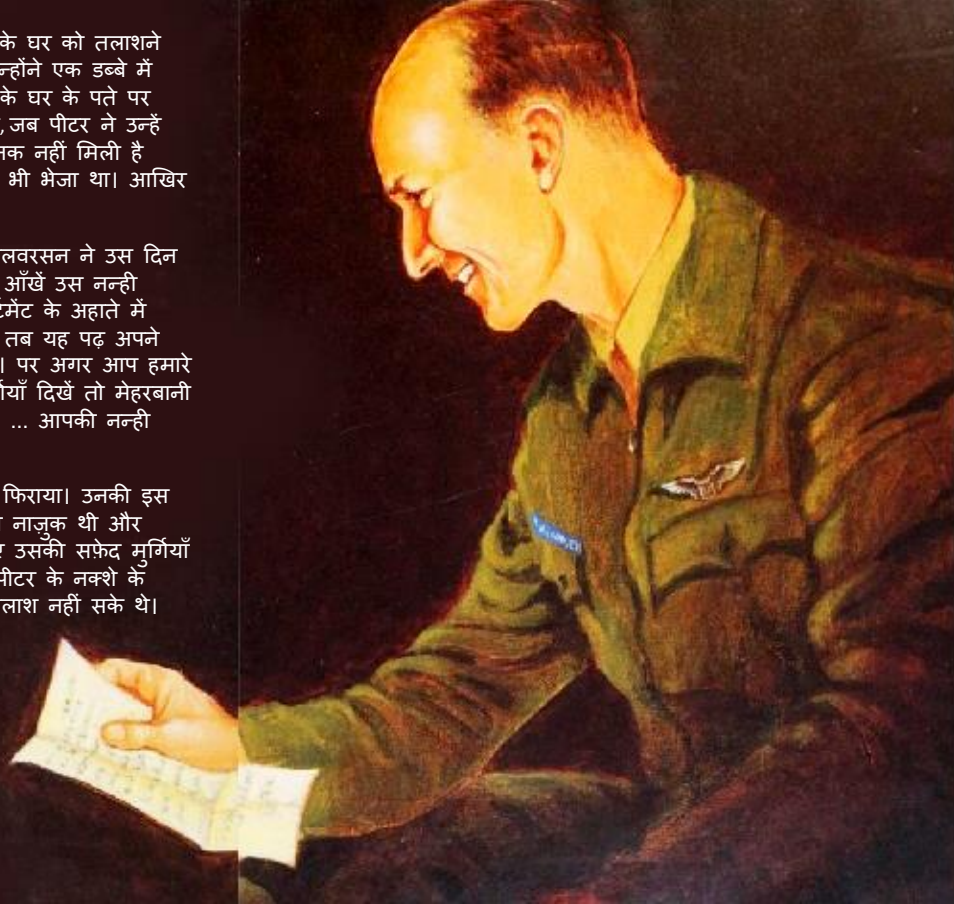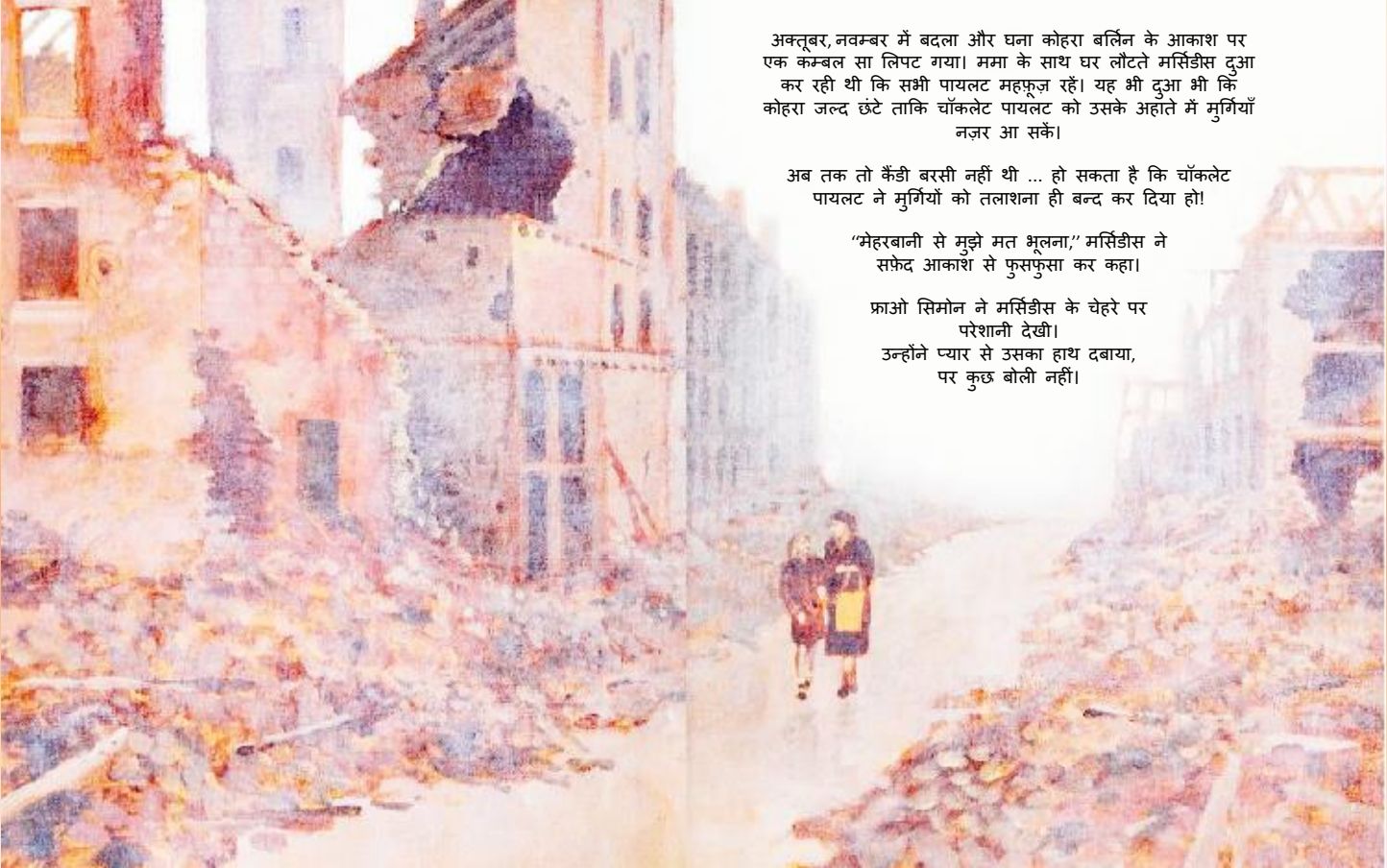
अक्तूबर, नवम्बर में बदला और घना कोहरा बर्लिन के आकाश पर एक कम्बल सा लिपट गया। ममा के साथ घर लौटते मर्सिडीस दुआ कर रही थी कि सभी पायलट महफ़ूज़ रहें। यह भी दुआ भी कि कोहरा जल्द छंटे ताकि चॉकलेट पायलट को उसके अहाते में मुर्गियाँ नज़र आ सकें।

अब तक तो कैंडी बरसी नहीं थी ... हो सकता है कि चॉकलेट पायलट ने मुर्गियों को तलाशना ही बन्द कर दिया हो!

"मेहरबानी से मुझे मत भूलना," मर्सिडीस ने सफ़ेद आकाश से फुसफुसा कर कहा।

फ्राओ सिमोन ने मर्सिडीस के चेहरे पर परेशानी देखी।
उन्होंने प्यार से उसका हाथ दबाया,
पर कुछ बोली नहीं।

पर जब वे 15 हाहनैल स्ट्रासे के अपने अपार्टमेंट में पहुँचे, फ्राओ सिमोन मर्सिडीस को उसे दंग करने वाला पैकेट थमाने से खुद को रोक नहीं सकीं। वह पैकेट टैम्पलहॉफ़ हवाई अड्डे से डाक मे डाला गया था। वह भूरे कागज़ में लिपटा और रस्सी से बंधा हुआ था। मर्सिडीस ने उसे फ़ौरन ही खोला।
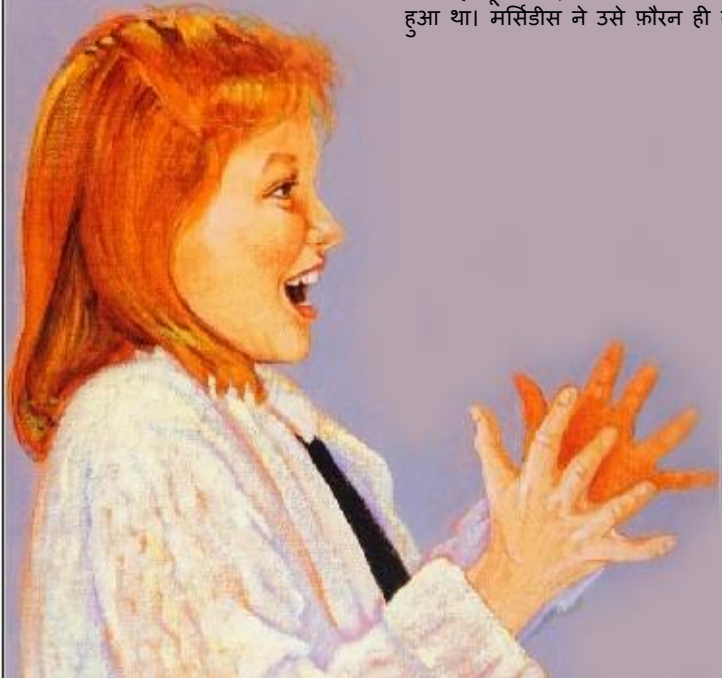
खोलते ही चॉकलेट की मीठी खुशबू जैम की महक की तरह कमरे में पसर गई। चॉकलेट बार! सफ़ेद और हरी पोदीने वाली च्यूइंग गम, गुलाबी बबल गम! और इंद्रधनुषी रंगों की मीठी गोलियाँ! उसके चॉकलेट पायलट ने आख़िर उसे ढूंढ ही लिया था।

मर्सिडीस ने ममा को खुशी के आँसू पलकों से झपकाते देखा। उसने ममा को एक मोटी चॉकलेट बार दी और अपने लिए सूखे मेवों और कैरामल वाली चॉकलेट चुनी।

उसने सावधानी से कागज़ हटाया, रुपहली पन्नी फाड़ी, तब चॉकलेट की मिठास में दाँत गड़ाए, और उसके स्वाद को जीभ पर घुलने दिया। हरेक रेशमी कौर के साथ उसकी आँखें यों मुंदतीं मानो वह स्वार्गिक स्वाद चख रही हो।

पैकेट में मर्सिडीस के लिए एक ख़त भी थाः

“माइने लीबे मर्सिडीस, (मेरी प्यारी मर्सिडीस)

फ्रांकफुर्ट, 4 नबम्बर 48

तुम्हारे छोटे-से पत्र के लिए शुक्रिया। मैं हर दिन तुम्हारे घर के ऊपर से नहीं उड़ता, पर बेशक अक्सर उड़ता हूँ। मुझे पता ही नहीं था कि हाहनेल स्ट्रासे में इतनी प्यारी नन्ही लड़की रहती है। अगर मैं फ्रीडनाउ के कुछ चक्कर लगाऊं, तो मैं पक्का तुम्हारे घर का वह अहाता ढूंढ लूं जिसमें सफ़ेद मुर्गियाँ हैं, पर मेरे पास इतना समय नहीं रहता। उम्मीद करता हूँ कि इस ख़त के साथ जो है वह तुम्हें थोड़ी-सी खुशी दे सकेगा।

दाइने शेकोलाडनओंकेल (तुम्हारा चॉकलेट अंकल)

- गेल हालवरसन”

इस दिन की याद मर्सिडीस के साथ जीवन भर रहने वाली थी।
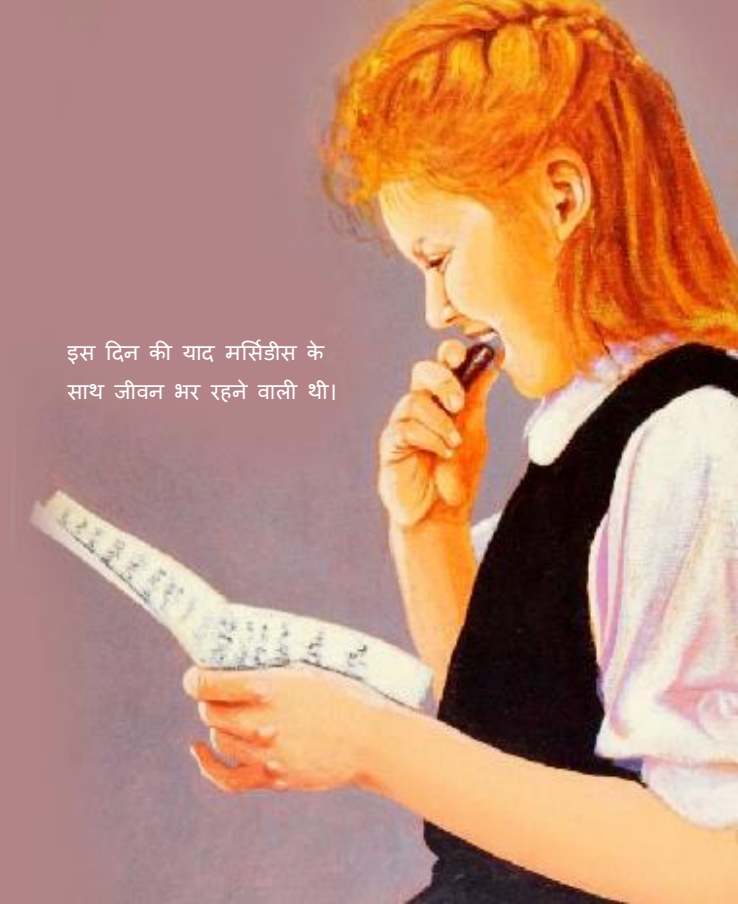
इसके कुछ महीनों बाद जनवरी 1949 में लैफ्टिनेन्ट हालवरसन नन्ही मर्सिडीस और पीटर ज़िमरमैन और बर्लिन के तमाम बच्चों के बारे में तब सोच रहे थे, जब वे आख़िरी बार टैम्पलहॉफ से उड़ कर वापस जा रहे थे। यह असंभव लग रहा था, पर बर्लिन एयरलिफ्ट में उनकी सात महीने की तैनातगी खत्म हो चुकी थी। वे उदास थे, पर जब अमरीका की दिशा के बादल छंटे वे मुस्कुराए। इसलिए क्योंकि वे जानते थे कि बर्लिन के बच्चों के लिए उन्होंने जो कैंडी बरसानी शुरू की थी, उसे उनके स्क्वाड्रन के पायलट मित्र जारी रखेंगे।

पर उस दिन जो वे नहीं जानते थे वह यह था की उनकी बर्लिन की कहानी खत्म नहीं हुई थी ...

उपसंहार

1970 में कर्नल गेल हालवरसन, चॉकलेट पायलट, 22 सालों बाद अपनी पत्नी और पाँच बच्चों के साथ बर्लिन लौटे। अब वे टैम्पलहॉफ के प्रभारी कर्नल थे और अमरीकी वायु सेना के प्रतिनिधि।

1972 की एक शाम कर्नल हालवरसन ने बर्लिन के एक ऐसे जोड़े का आमंत्रण स्वीकार किया जिससे वे पहले मिले नहीं थे। दो बच्चों की एक युवा माँ ने टैम्पलहॉफ के पास वाले एक अपार्टमेंट में उनका स्वागत किया। वह युवती भी एक पायलट थी।

काँच का सामान रखने वाली अल्मारी से, जहाँ वह अपना कीमती सामान रखती थी, उस युवती ने एक ख़त निकाला। "मेहरबानी से इसे पढ़ें," उसने कर्नल हालवरसन से कहा। ख़त शुरु हुआ, "माइने लीबे मर्सिडीस ...."

"मैंने वह चॉकलेट और कैंडी थोड़ी-थोड़ी कर खाई थी," मर्सिडीस की मुस्कान काँपी और उसकी आँखों में शुकराने के आँसू छलछला आए। "पर यह ख़त मैं हमेशा-हमेशा रखूंगी।"

मर्सिडीस ने कर्नल हालवरसन को वह खिड़की दिखाई जहाँ से वह हवाई जहाजों को देखा करती थी, और नीचे का वह अहाता भी जहाँ किसी समय उसकी सफ़ेद मुर्गियाँ रहती थीं। उसने यह बताने की कोशिश की कि चॉकलेट पायलट के तोहफ़े का उसके लिए क्या मायने था।

कर्नल हालवरसन की आँखें नम हो गईं। वे मर्सिडीस की बात समझ गए। पर वे उसे कैसे बता सकते थे कि च्यूइंग गम के दो पत्तों ने उन्हें कितनी ख़ुशी दी थी? उन्होंने विश्व युद्ध को गुज़रते और शीत युद्ध को शुरू होते देखा था, पर साथ ही बच्चों की आँखों में बेहतर कल की उम्मीद भी देखी थी। ना, वे यह सब उसे समझा न सके। सो उन्होंने अपने पहले वाले ख़त के नीचे ही मर्सिडीस के लिए कुछ और दर्ज किया:

प्रिय मर्सिडीस व परिवार!
22 सितम्बर 1972

24 वर्ष बाद तुमसे और तुम्हारे परिवार से मिल कर मुझे अपार ख़ुशी हुई। मैं तुम्हारे उज्जवल भविष्य की कामना करता हूँ - और उम्मीद करता हूँ कि तुम सबको अनेकानेक मीठी चीज़ें प्राप्त होंगी।

- गेल एस. हालवरसन

कई सालों तक मर्सिडीस उस पत्र को अपनी काँच की चीज़ों वाली अलमारी में रखे रही। जितनी बार कर्नल हालवरसन उससे मिलने आते, वे उसी पर दोस्ती का एक नया संदेशा लिखते रहे।

हर दिन जब मर्सिडीस आज़ाद बर्लिन के आकाश तले चलती हैं, उस तोहफ़े की मीठी-मधुर स्मृतियाँ उनके मन में ठीक उसी तरह उड़ती हैं, जैसे उम्मीद के वे रुपहले हवाई जहाज़ उड़ा करते थे।

लैफ्टिनेन्ट हालवरसन का अद्‌भुत आपरेशन लिटिल विटलस्, जो कैंडी बरसाने के अभियान को कहा जाने लगा था, दुनिया भर में प्रेम के अभियान के रूप में फैला। चिकोपी, मैसाच्युसैटस् के लोगों ने रेडियो पर उनके काम के बारे में सुनने के बाद उसे अपना बना लिया। एक पुरान दमकल स्टेशन को लिटिल विटलस् का केन्द्र बना वहाँ के लोगों ने स्थानीय व्यापारियों और 22 स्कूलों की मदद सेः 11,000 यार्ड रिबन; 2,000 श्यूट की शीटें; 3,000 रूमाल; और 18,000 टन कैंडी इकट्‌ठी की। जब उनका उत्पादन सबसे अधिक था, वे हर दिन छोटे पैराशूटों में बंधी 800 पाउण्ड कैंडी, राइन-मेन हवाई अड्डे पर भिजवाते थे।

जनवरी 1949 तक, यानी जब लैफ्टिनेन्ट गेल हालवरसन ने बर्लिन छोड़ा, वे 126 एयलिफ्ट उड़ानें भर चुके थे। और रूसी नाकेबन्दी के 15 महीनों के दौरान वे तथा उनके स्क्वाड्रन के साथी 250,000 से अधिक कैंडी से भरे नन्हे पैराशूट हवाई जहाज़ों से गिरा चुके थे। यानी बर्लिन के उनकी प्यारी मर्सिडीस जैसे 100,000 बच्चों के लिए 20 हज़ार टन से भी अधिक चॉकलेट और च्यूइंग गम बरसा चुके थे।

1974 में कर्नल गेल हालवरसन अमरीकी वायु सेना से 31 वर्ष की सेवा व अनेक सम्मानों सहित सेवा निवृत्त हुए। वे अपना समय यूटा के अपने पशु फार्म व एरिज़ोना स्थित अपने घर के बीच गुज़ारते हैं। और अब भी दुनिया भर के बच्चों के लिए ‘कैंडी ड्राप्स’ करते हैं। अपनी बाद की बर्लिन यात्राओं में उन्होंने बर्लिन के उन मूल बच्चों के नाती-पोतियों के लिए कैंडी बरसाई हैं। 1944 में बॉस्निया में और 1999 में कैम्प होप में, जो कोसोवा के अल्बेनियाई शरणार्थियों के लिए अमरीकियों द्वारा बनाया शिविर था, गेल ने यही दोहराया। उन्होंने अपने 24 नाती-पोतों के लिए और मर्सिडीस के चार बच्चों के लिए भी कैंडी की बरसात की है।

कर्नल गेल एस. हालवरसन

मारगॉट थेइस रेवनः पेशेवर लेखिका हैं, जो गत् 30 वर्षों से पत्रिकाओं व समाचार पत्रों में लिखने के साथ बाल पुस्तकों की रचना करती रही हैं। उन्हें पाँच राष्ट्रीय पुरस्कारों से नवाज़ा गया है, जिसमें आईआरए टीचर्स चॉइस अवॉर्ड भी शामिल है। मारगॉट ने रोज़मोंट कॉलेज से अंग्रेज़ी में स्नातक किया, तब विलानोवा विश्वविद्यालय से थियेटर व केन्ट स्टेट विश्वविद्यालय से जर्मन भाषा का अध्ययन किया। वे चार बच्चों, स्कॉट, ब्रायन, माइकल व एशली की माँ हैं। उनके तीन कुत्ते (और एक बेहद भले पति ग्रेग) भी हैं। वे अपना समय कानकॉर्ड, मैसाच्युसैटस्, चार्ल्सटन, साउथ कैरोलाइना तथा वेस्ट चैस्टरफील्ड, न्यू हैम्पशायर में बिताती हैं।

ऐतिहासिक काल्पनिक कथाओं की लेखिका होने के नाते मारगॉट को वायु सेना के सेवा निवृत्त कर्नल गेल हालवरसन के बारे में पता चला जो बर्लिन एयरलिफ्ट के दौरान बच्चों के लिए कैंडी बरसाया करते थे। वे मुग्ध हो गईं और इस अद्भुत पायलट के बारे में और द्वितीय विश्व युद्ध के बाद उनके काम के बारे में सब कुछ जानने को उतावली थीं। जल्द ही वे अपनी बेटी के साथ कर्नल साहब और उनके परिवार से मिलने यूटा गईं। वहीं से एक खूबसूरत दोस्ती की शुरुआत हुई, और उम्मीद व प्रेम की इस कथा को आज के बच्चों के साथ साझा करने की यात्रा भी।

हाइसबर्ट वॉन फ्रैंकनहायज़न का जन्म 1951 में नीदरलैण्ड में हुआ था। अपने सात भाइयों और सात बहनों के साथ वे उस दौरन बड़े हुए जब द्वितीय विश्व युद्ध का प्रभाव उनके देश पर भी था। बचपन से ही उन्हें चित्र आँकने को शौक था, सो उनके पिता ने उन्हें उसे ही अपना पेशा बनाने को प्रोत्साहित किया। हाई स्कूल पूरा करने के बाद उन्होंने आर्नहैम स्थित रॉयल एकाडमी ऑफ आर्टस् से स्नातक स्तर का अध्ययन किया। 1976 में अमरीका प्रवास करने के बाद अगले 17 वर्षों तक वे मिशिगन नैचरल रिसोर्सेस् मैगज़ीन के कला निदेशक रहे। हाइसबर्ट अब पूर्णकालिक चित्रकार हैं, और मनमर्जी से जो जी चाहे उसे आँकने की आज़ादी से प्यार करते हैं।

हाइसबर्ट और रॉबी और उन दोनों की बेटियाँ कैली व हेदर, एक 40 एकड़ के फार्म में, भेड़ों, घोड़ों, कुत्तों, बिल्लियों, टर्कियों, मुर्गियों और कबूतरों के साथ रहते हैं। वे कई अनाथ व घायल जंगली पशुओं को अस्थाई आवास भी उपलब्ध करवाते हैं। उनका फार्म और उसके पशु किसी भी कलाकार को आँकने के लिए अद्भुत विषय प्रदान करते हैं।

हाइसबर्ट को *मर्सिडीस व चॉकलेट पायलट* पर काम करने का सबसे अच्छा पक्ष लगा कर्नल गेल हालवरसन और उनकी स्नेही पत्नी लॉरेन से मिलना। “जितने भी लोगों से मैं अब तक मिला हूँ वे उनमें सबसे दयालु और सराहनीय इन्सान हैं। मुझे गर्व है कि मैं उन्हें जानता हूँ।”